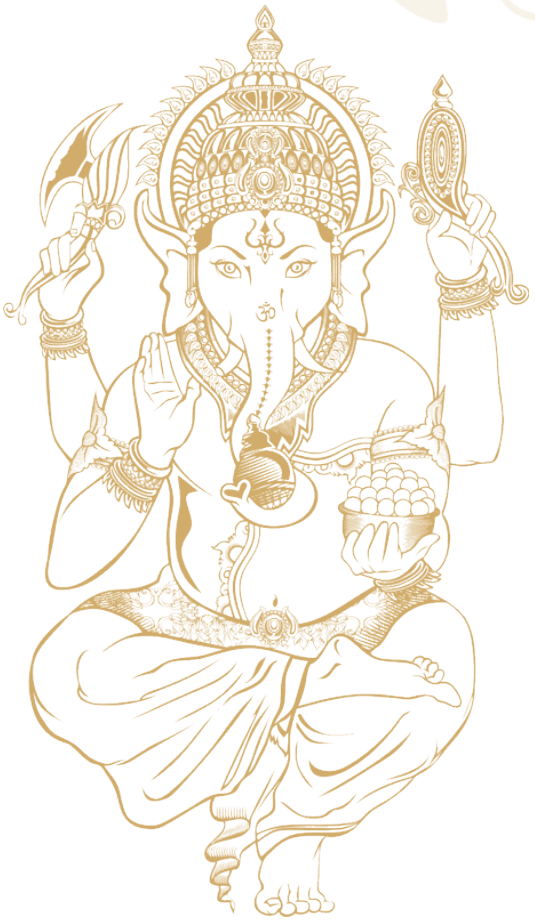

Mr.Narender

24 Jul 1990

10:45 PM

Kaithal

Model: Baby-Horoscope

Order No: 120284901

तिथि 24/07/1990 **समय** 22:45:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Kaithal **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:43:45
अक्षांश 29:47:00 उत्तर **रेखांश** 76:29:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:24:04 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	18:29:35 घं
वेलान्तर	00:06:28 घं
सूर्योदय	05:38:27 घं
सूर्यास्त	19:22:12 घं
चैत्रादि संवत	2047
शक संवत	1912
मास	श्रावण
पक्ष	शुक्ल
तिथि	3
नक्षत्र	मघा
योग	वरियान
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	मूषक
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	क्षत्रिय
वश्य	वनचर
वर्ग	मूषक
युँजा	मध्य
हंसक	अग्नि
जन्म नामाक्षर	मे-मेहर
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-रजत
होरा	बुध
चौघड़िया	उद्वेग

विंशोत्तरी

केतु 1वर्ष 0मा 26दि

चन्द्र

20/08/2017
20/08/2027

चन्द्र	20/06/2018
मंगल	19/01/2019
राहु	20/07/2020
गुरु	19/11/2021
शनि	20/06/2023
बुध	19/11/2024
केतु	20/06/2025
शुक्र	19/02/2027
सूर्य	20/08/2027

योगिनी

भद्रिका 0वर्ष 9मा 6दि

भद्रिका

30/04/2022
30/04/2027

भद्रिका	09/01/2023
उल्का	09/11/2023
सिद्धा	29/10/2024
संकटा	09/12/2025
मंगला	29/01/2026
पिंगला	10/05/2026
धान्या	09/10/2026
भ्रामरी	30/04/2027

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			16:57:53	मीन	रेवती	1	बुध	बुध	---	0:00			
सूर्य			07:49:08	कर्क	पुष्य	2	शनि	केतु	मित्र राशि	1.25	ज्ञाति	पितृ	मित्र
चंद्र			11:17:22	सिंह	मघा	4	केतु	शनि	मित्र राशि	1.50	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			14:17:12	मेष	भरणी	1	शुक्र	शुक्र	स्वराशि	1.58	भ्रातृ	भ्रातृ	सम्पत
बुध			29:02:50	कर्क	आश्लेषा	4	बुध	शनि	शत्रु राशि	0.97	आत्मा	ज्ञाति	अतिमित्र
गुरु		अ	00:53:09	कर्क	पुनर्वसु	4	गुरु	मंगल	उच्च राशि	1.04	कलत्र	धन	वध
शुक्र			11:46:09	मिथु	आर्द्रा	2	राहु	शनि	मित्र राशि	1.27	मातृ	कलत्र	साधक
शनि	व		27:33:27	धनु	उत्तराषाढ़ा	1	सूर्य	चंद्र	सम राशि	1.37	अमात्य	आयु	विपत
राहु			13:32:13	मक	श्रवण	2	चंद्र	राहु	मित्र राशि		---	ज्ञान	क्षेम
केतु			13:32:13	कर्क	पुष्य	4	शनि	राहु	मित्र राशि		---	मोक्ष	मित्र

लग्न-चलित

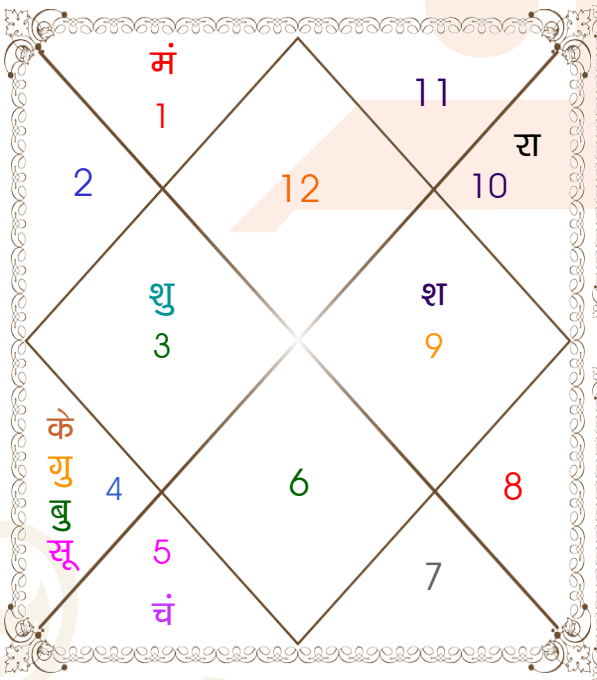

चन्द्र कुंडली

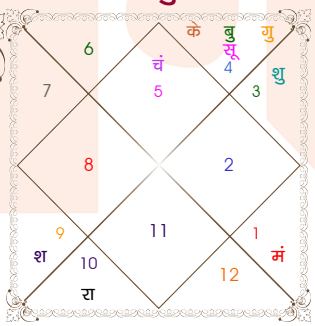

नवमांश कुंडली

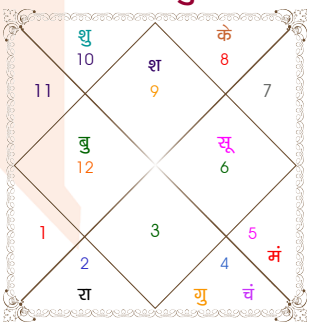

सर्वाष्टकवर्ग

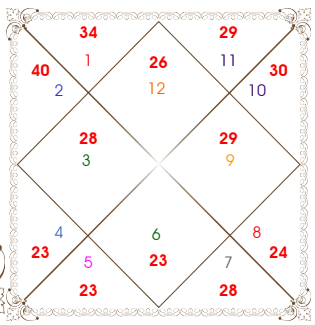

दशमांश कुंडली

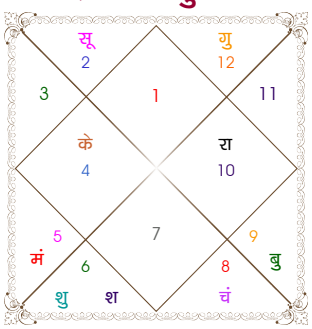

नक्षत्रफल

आपका जन्म मघा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि सिंह तथा राशि स्वामी सूर्य होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण क्षत्रिय, योनि मूषक, वर्ग मूषक, नाड़ी अन्त्य तथा गण राक्षस होगा। नक्षत्र के चरणानुार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "मे" से प्रारम्भ होगा यथा- मेहर सिंह

आप गण्डमूल नक्षत्र में उत्पन्न हुए हें। यद्यपि चतुर्थ चरण में पैदा होने से इसका अशुभ फल न्यून होता हैं। तथापि सावधानी वश इसकी शास्त्रोक्त विधि से शान्ति करा लेनी चाहिए। यह कार्य जन्म समय में ही सम्पन्न होना चाहिए। इसके लिए इस नक्षत्र के कम से कम 28000 जप करवाने चाहिए तथा 28वें दिन पुनः जब यह नक्षत्र आवे तो उस दिन जपे हुए मंत्रों के दशांश का हवन करना चाहिए। यह समस्त कार्य शास्त्रोक्त विधि विधान तथा योग्य विद्वान के द्वारा सम्पन्न करना चाहिए। ऐसा करने से जातक जीवन में सुख तथा आनन्द को प्राप्त करता हैं।

ऊँ पितृभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
पितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
प्रपितामहेभ्यः स्वधायिभ्यः स्वधा नमः।
अक्षन्नपितरो ळमीमवन्तः पितरोडतृप्यन्त पितरः शुन्धध्यम्।।
जातक परिजातः

आप अपने सम्पूर्ण जीवन काल में धनैश्वर्य तथा सेवकों से युक्त रहेंगे। धन की न्यूनता से आप कभी भी व्याकुल नहीं रहेंगे साथ ही समस्त भौतिक तथा सांसारिक सुखों का आप आनन्दपूर्वक उपभोग करने वाले होंगे। आप देवताओं तथा माता पिता के प्रिय भक्त होंगे तथा श्रद्धाभाव से इनकी सेवा करेंगे। साथ ही हमेशा उद्योग में तत्पर भी रहेंगे।

बहुभृत्यः धनो भोगी सुरपितृभक्तो महोद्यमः पित्रे।
बृहज्जातकम्

अर्थात् मघा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, बहुत से नौकरों को रखने वाला, भोगैश्वर्य से सम्पन्न, माता पिता तथा देवताओं का भक्त एवं उद्योगी पुरूष होता है।

अपने श्रेष्ठ तथा वृद्धजनों के प्रति आपका असीम सेवा भाव रहेगा। आप साहस भरे कार्यों को करने में अति उत्सुक रहेंगे तथा इसमें सफलता भी प्राप्त करेंगे। फलतः आप सेना या पुलिस में कोई उच्चपद को प्राप्त कर सकेंगे। साथ ही राजकीय सेवा में भी आप सदैव तत्पर रहेंगे।

बहुभृत्यो धनी भोगी पितृभक्तो महोद्यमी।
चमूनाथा राजसेवी मघायां जायते नरः।।
मानसागरी

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक अधिक नौकरों वाला, धनवान, भोगी, पितृभक्त, महान उद्यमी, सेनापति तथा राजा की सेवा में तत्पर रहता है।

पल प्रति पल में ही रूप परिवर्तन करने की कला में आप अत्यन्त निपुण होंगे। उत्सवों के प्रति आपके मन में अत्यन्त ही लगाव तथा उत्सुकता रहेगी अतः आप इनके आयोजनों में पूर्ण सक्रियता से भाग लेगे तथा तन मन धन से अपना सहयोग भी प्रदान करेंगे। साथ ही आप सामान्य जनता के कोई उच्चाधिकारी भी हो सकते हैं।

बहुरूपो धनीभोगी पितृभक्तो महोत्सवी।
नरनाथो राजसेवी मघायां जायते नरः।।
जातकदीपिका

अर्थात् मघा में उत्पन्न जातक बहूरूपी, धनवान, ऐश्वर्य सम्पन्न, माता पिता का भक्त महान उत्सवी, मनुष्यों का स्वामी तथा राजा की सेवा करने वाला होता है।

आपके मन में कठोरता की बहुलता रहेगी तथा स्वभाव से भी आप उग्र रहेंगे। विद्या र्जन तथा ज्ञान प्राप्त करने में आप पूर्ण रूप से सफलता को प्राप्त करेंगे। आप बुद्धिमान तथा शत्रु को पराजित तथा नष्ट करने में चतुर होंगे। आप हमेशा पुण्य के कार्यों को करने में तत्पर रहेंगे तथा पापकर्मों में आपकी कोई रूचि नहीं रहेगी। आप कभी कभी अपनी अभिमानी प्रवृति का भी प्रदर्शन करेंगे। तथा स्त्री वर्ग के आप पूर्ण रूप से वश में रहेंगे तथा अपने समाज से आप पूर्ण मान सम्मान तथा आदर को प्राप्त करने में सफलता अर्जित करेंगे।

कठोरचित्तः पितृभक्तियुक्तस्तीव्र स्वभावस्त्वनवद्यविद्यः।
चेजन्मभं यस्य मघा नघः सन्मति सदाराति विघातदक्षः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् मघा नक्षत्र का जातक कठोर हृदय वाला पिता का भक्त, तीव्र स्वभाव वाला, विद्यावान, पाप रहित, बुद्धिमान एवं शत्रु को जीतने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता है। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित है। अतः आपके लिए यह अशुभ नहीं रहेगा।

अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शत्रु अल्प मात्रा में रहेंगे तथा वे आपसे पराजित तथा प्रभावित होंगे। परन्तु कभी कभी आपके स्वभाव में क्रोध तथा उग्रता का भाव भी दृष्टिगोचर होगा। आपका सौन्दर्य आकर्षक होगा एवं शरीर में पूर्ण रूप से कोमलता विद्यमान रहेगी। आप अपने जीवन में विविध प्रकार के सुखसंसाधनों को अर्जित करेंगे तथा

प्रसन्नताा पूर्वक उसका उपभोग करने में भी सफल रहेंगे। द्रव्यों के प्रति भी यदा कदा आपकी आसक्ति रहेगी एवं कभी कभी सामान्य बीमारियों से भी आप पीड़ित रहेंगे।

सिंह राशि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वभाव से उग्र तथा तेजस्वी होंगे। आपके कपोल तथा मुखमंडल विस्तीर्ण रहेंगे तथा आखे पीतवर्ण से युक्त छोटी होंगी। आप वन तथा पर्वतों की गुफाओं में भ्रमण करने के लिए उत्सुक रहेंगे कभी कभी आप अकारण ही शीघ्र क्रोधित भी हो जाएंगे। आप जीवन में मानसिक चिन्ताओं से ग्रसत रहेंगे। आप में दान शीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा अवसरानुकूल इस प्रवृति का भी आप पालन करते रहेंगे। आप यदा कदा अभिमान का भी प्रदर्शन करेंगे। माता के आप प्रिय रहेंगे तथा उनकी श्रद्धापूर्वक सेवा करना अपना प्रिय कर्तव्य समझेंगे। स्त्री वर्ग में आप खास रुचि का प्रदर्शन नहीं करेंगे। आपकी सन्तति में पुत्रों की संख्या अल्प मात्रा में ही रहेगी। आपकी बुद्धि स्थिर रहेगी तथा धैर्य पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करेंगे।

तीक्ष्णः स्थूलहनुविशालवदनः पिङ्गेक्षणोऽल्पात्मजः।
स्त्रीद्वेषी प्रियमासकाननगा कुप्यत्यकार्ये चिरम्।।
क्षुतृष्णोदरदन्तमानसरुजा सम्पीडितस्त्यागवान।
विक्रान्तः स्थिरधीः सुगर्वितमनामातुर्विधेयो योऽर्कभे।।
बृहज्जातकम्

आपके शरीर की अस्थियां पुष्ट तथा सुडौल होंगी तथा शरीर में रोग भी अल्प मात्रा में ही विद्यमान रहेंगे। आपका कंठ भाग स्थूल रहेगा तथा स्वाभाविक उग्रता आपके स्वभाव में विराजमान रहेगी। कार्यारम्भ से पूर्व आप कोई न कोई ध्वनि अपने मुंह से अवश्य निकालेंगे। आपका वक्षस्थल विस्तृत तथा देखने में आकर्षक रहेगा। समाज में आप एक पराक्रमी पुरुष समझे जाएंगे। तथा सभी लोग आपके प्रभुत्व को स्वीकार करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अत्यन्त चौकस प्रवृति के होंगे तथा किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व सम्पूर्ण परिस्थितियों का गम्भीरता से अध्ययन करेंगे।

स्थूलास्थिर्मन्दरोमा पृथुवदनगलो ह्रस्वपिङ्गाक्षियुग्मः।
स्त्रीद्वेषी क्षुत्पिपासा जठररुदरजपीडितो मांसभक्षः।।
दाताতীক্ষ্ণোऽल्पपुत्रो विपिननगरतिमातृवश्य सुवक्षा।
विक्रान्तः कार्यालापी शशभृतिरविभे सर्वगम्भीर दृष्टिः।।
सारावली

आपकी ठोड़ी दृढ तथा मोटी होगी तथा मुखाकृति भी विशाल दृष्टिगोचर होगी। आप माता के प्रिय वत्सल रहेंगे तथा उनकी पूर्ण सेवा शुश्रूषा में तत्पर रहेंगे।

पिङ्गेक्षणः स्थूलहनुर्विशालवक्त्रोऽभिमानी सपराक्रमः।
कुप्यत्कार्ये वनशैलगामी मातुर्विधेयः स्थिरधीः मृगेन्द्रेण।।
फलदीपिका

आप पेट भर धनार्जन से सन्तुष्ट तथा शान्ति की अनुभूति करेंगे। आपका स्वभाव

अमर्षपूर्ण तथा मांस का लोभी होगा। आप पर्वतों तथा पहाड़ों के भ्रमण के लिए हमेशा उत्सुक रहेंगे।

उदरभरणतुष्टः क्रोधनो मांसलुब्धो।
गहनगुरुगुहानां सेवको बंधुहीनः।।
कपिलनयन भग्नस्तुङ्गवक्षाः क्षुधार्तो।
विपुल सुरतसेवी सिंह राशि भे मनुष्यः।।
जातकदीपिका

आप स्वभाव से ही क्षमाशील प्रकृति के व्यक्ति होंगे तथा दण्ड की अपेक्षा क्षमा करने को प्राथमिकता प्रदान करेंगे। आप अपने किसी न किसी कार्य में हमेशा तत्पर रहेंगे तथा आलस्य की हमेशा उपेक्षा करने वाले होंगे। आप अधिकांश समय देश विदेश की यात्रा करने में व्यस्त रहेंगे। शीत से आपको अधिक डर लगेगा। समाज में अन्य जनों के प्रति आपका व्यवहार विनयशीलता से युक्त रहेगा जिससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे तथा आपकी प्रशंसा करेंगे। साथ ही माता पिता से आपका विशेष प्रेम तथा श्रद्धा का भाव रहेगा। आप कई व्यसनों के भी करने वाले होंगे। आप अपने समाज में एक यशस्वी तथा कीर्तिशाली पुरुष होंगे तथा सामाजिक सम्मान से सर्वथा युक्त रहेंगे साथ ही आप अच्छे तथा गुणवान मित्रों के भी मित्र होंगे।

अचल काननयानमनोरथं गृहकलित्रच गलोदरपीडनम्।
द्विजपतिमृर्गराजगतो नृणांवितनुते तनुतेजविहीनताम्।।
जातकाभरणम्

आपकी आखें तथा शारीरिक सरंचना अत्यन्त ही सुन्दर एवं मनोहर होगी। आपकी दृष्टि गम्भीरता से युक्त रहेगी तथा गम्भीरतापूर्वक परिस्थितियों का अवलोकन करने के बाद ही आप किसी कार्य को प्रारम्भ करेंगे। साथ ही आप जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में सफल रहेंगे।

सिंहस्थे पृथुलोचनः सुबदनो गम्भीरदृष्टिः सुखी।।
जातक परिजातः

राक्षस गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी प्रवृति कभी कभी व्यर्थ एवं अधिक बोलने वाली होंगी। आपके मन में भी दया का भाव अल्प मात्रा में रहेगा। परन्तु साहस का आप में अभाव नहीं होगा तथा अपने समस्त कार्यों को साहस पूर्वक सम्पन्न करेंगे। आपको शीघ्र ही छोटी छोटी बातों पर क्रोध आएगा तथा अपने काम को बनाने के लिए नित्य प्रयत्नशील रहेंगे।

आप उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी पीड़ित हो सकते हैं। साथ ही आपका रूप भी सामान्य सुन्दर होगा। आप कभी कभी अपने सम्भाषण में में कटु शब्दों का प्रयोग करेंगे जिससे अन्य जनों को कष्ट की अनुभूति होगी। अतः यत्नपूर्वक आपको मधुर एवं सरल शब्दों का उपयोग करना चाहिए।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी क्रोधपरोद्धतश्च।

दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।
जातकभरणम्

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

मूषक योनि में पैदा होने के कारण आप तीव्र बुद्धि के स्वामी होंगे तथा धनैश्वर्य एवं वैभव से हमेशा अपने जीवन काल में परिपूर्ण रहेंगे। धनाभाव कभी भी नहीं रहेगा। आप हमेशा अपने कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे। खाली बैठना आपको अच्छा नहीं लगेगा। अतः सक्रियता के लिए कुछ न कुछ अवश्य करते रहेंगे। आलस्य का आपके अन्दर सर्वथा अभाव रहेगा। परन्तु आप अन्य लोगों पर कम ही विश्वास करेंगे। यदि आप अन्य जनों से कोई कार्य करवाना चाहते होंगे तो उसे अपने ही समक्ष पूर्ण करायेंगे।

बुद्धिमान् वित्तसम्पूर्णः स्वकार्यकरणोद्यतः।
अप्रमतोळप्यविश्वासी नरो मूषक योनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मूषक योनि का जातक बुद्धिमान, धनवान, स्वकार्य में तत्पर, गर्वहीन तथा किसी पर भी विश्वास न करने वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति षष्ठ भाव में स्थित है। अतः माता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। परन्तु समय समय पर उन्हें शारीरिक परेशानी होती रहेगी। धन सम्पत्ति का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको पूर्ण सहायता प्रदान करेंगी। साथ ही आपके कार्यों के व्यवधान आदि को भी दूर करने के लिए प्रयत्नशील रहेंगी एवं आपकी सफलता की हमेशा इच्छुक रहेंगी।

आप भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धावान रहेंगे एवं आजीवन उनकी सेवा के लिए तत्पर रहेंगे। साथ ही समय समय पर उनको अपनी ओर से वांछित सहयोग तथा सहायता भी प्रदान करेंगे। आपके संबंध मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद होंगे जिससे कभी कभी अप्रिय स्थिति उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय उपरान्त सब कुछ ठीक हो जाएगा।

आपके जन्म समय में सूर्य की स्थिति पंचम भाव में है। अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे एवं उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। साथ ही उनकी आयु भी दीर्घ होगी। धन सम्पत्ति से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपकी यथाशक्ति सहायता करते रहेंगे। आपकी सन्तति के प्रति भी वे स्नेहशील रहेंगे तथा उनके पालन में अपनी पूर्ण रुचि प्रदर्शित करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन भी आप करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध भी मधुर रहेंगे लेकिन यदा कदा आपसी मतभेदों में विभिन्नता होने से संबंधों में कटुता भी आएगी परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः

ही ठीक हो जाएगा। साथ ही जीवन में आप उनका पूरा ध्यान रखेंगे एवं उनकी आर्थिक तथा अन्य सहायता करने के लिए भी उद्यत रहेंगे एवं उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

आप के जन्म काल में मंगल द्वितीय भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा वे शारीरिक रूप से व्याकुलता की अनुभूति भी करते रहेंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव विद्यमान रहेगा। धनार्जन एवं विद्यार्जन संबंधी कार्यों में वे आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही जीवन में अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों में भी आपको उनका पूर्ण सहयोग एवं सद्भाव प्राप्त होगा।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह की भावना रहेगी। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा उनमें आपसी मतभेदों के कारण अनिश्चित काल के लिए कटुता या तनाव का वातावरण होगा। जीवन में आप हमेशा भाई बहिनों का सुख दुःख में ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से हमेशा उन्हें पूर्ण आर्थिक एवं अन्य रूप में सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आपके लिए ज्येष्ठ मास, तृतीया अष्टमी, त्रयोदशी तिथियां, मूल नक्षत्र, धृतियोग, ववकरण, शनिवार, प्रथम प्रहर तथा मकर राशि में स्थित चन्द्रमा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 मई से 14 जून के मध्य 3,8,13 तिथियों, मूल नक्षत्र, धृतियोग तथा बवकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शनिवार, प्रथम प्रहर तथा मकर राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा तथा स्वास्थ्य के प्रति भी सजग रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति हो रही हो अथवा व्यापार नौकरी पदोन्नति अथवा अन्य कार्यों में सफलता न मिल रही हो या अन्य बाधाएं उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट सूर्य भगवान को अर्ध्य देना चाहिए तथा उपासना भी करनी चाहिए। इसके साथ ही रविवार का उपवास भी श्रेष्ठ फलदायक रहेगा एवं लाल वस्त्र, लाल फूल, सोना, माणिक्य, गुड़, गेहूं इत्यादि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सूर्य के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिए इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फल कम होकर शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा सर्वत्र लाभमार्ग प्रशस्त होंगे।

ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
मंत्र- ऊँ ऐं ह्रीं ह्रीं सूर्याय नमः।